प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No- 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–26 मार्च, 2020)

मध्यकालीन हिन्दी और आधुनिककालीन हिन्दी

मध्यकाल तक हिन्दी का स्वरूप ब्रजभाषा और अवधी के रूप में स्पष्ट होता है। ब्रजभाषा और अवधी महान कवियों को पाकर उत्कर्ष पर था। यह भी कि ये दोनों तत्कालीन युग की लोकभाषा और राजभाषा टाइप थी। मुसलमान षासकों के स्थायित्व के कारण धीरे–धीरे उर्दू–अरबी–फारसी का राजभाषा के रूप में प्रयोग होने लगा। इस काल में भाषा के तीन रूप निखरकर सामने आये। ब्रजभाषा, अवधी और खड़ी बोली। ब्रजभाषा और अवधी का साहित्यिक विकास उत्कर्ष पर था। तत्कालीन ब्रजभाषा को कुछ देसी राजाओं का संरक्षण प्राप्त होने के कारण भक्तिकाल और रीतिकाल दोनों में अवधी की अपेक्षा ब्रजभाषा को अत्यधिक महत्त्व प्राप्त हुआ। ब्रजभाषा के कवियों में पुष्टिमार्ग और षुद्धाद्वैत संप्रदाय के कवियों सूरदास, नंद दास, श्री भट्ट, गदाधर भट्ट, हित हरिवंष एवं संप्रदाय निरपेक्ष कवियों में रसखान, मीराबाई आदि प्रमुख हैं। उत्तर मध्यकाल अर्थात रीतिकालीन रीति बद्ध कवियों में केषव दास, मतिराम, देव, पद्माकर आदि तथा रीति सिद्ध कवियों में बिहारी और रीतिमुक्त कवियों में घनानंद, आलम, बोधा आदि कवियों ने ब्रजभाषा के उत्कर्ष को बढ़ाया। इसी तरह अवधी भाषा को साहित्यिक रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय सूफी कवि कुतबन, जायसी, मंझन, आलम, उसमान, नूर मुहम्मद, कासिम षाह, षेख निसार, अलीषाह आदि तथा रामभक्त कवियों में अकेले तुलसीदास का नाम विषेष रूप में लिया जा सकता है। तुलसी ने 'राम चरित मानस' की रचना बैसबाड़ी अवधी में कर अवधी भाषा को जिस साहित्यिक ऊंचाई पर पहुंचाया वह अतुलनीय है।

मध्यकाल में खड़ीबोली का मुख्य केन्द्र उत्तर से बदलकर दक्कन या दक्षिण में हो गया। मध्यकाल में खड़ी बोली के दो रूप हो गये– एक, उत्तरी हिन्दी और दूसरी, दक्षिणी हिन्दी। खड़ी बोली का मध्यकालीन रूप कबीर, नानक, दादूदयाल, मलूकदास, रज्जब आदि संतों; गंग की 'चंद छंद वर्णन महिमा', रहीम के 'मदनाष्टक', आलम के 'सुदामा चरित', जटमल की 'गोरा बादल की कथा', वली, सौदा, इन्षां, नजीर आदि दक्कनी एवं उर्दू के कवियों, 'कुतुबषतम' (17वीं सदी), 'भोगलू पुराण' (18वीं सदी) और सन्त प्राणनाथ के 'कुलजमस्वरूप' आदि में मिलता है।

हिन्दी के आधुनिक काल तक की यात्रा में ब्रजभाषा जनभाषा से काफी दूर हट चुकी थी और अवधी ने तो बहुत पहले से ही साहित्य से मुंह मोड़ लिया था। 19वीं सदी के मध्य तक अंग्रेजी साम्राज्य का विस्तार भारत में हो चुका था। इस राजनीतिक परिवर्तन का प्रभाव मध्य देष की भाषा हिन्दी पर भी पड़ा। नयी राजनीतिक परिस्थितियों ने खड़ी बोली को प्रोत्साहन दिया। अंग्रेजी हुकूमत के षासकों को भी हिन्दी का प्रयोग आवष्यक हो गया था। इसी समय हिन्दी–उर्दू संघर्ष के कारण हिन्दी को अपने अस्तित्व निर्माण में काफी संघर्ष करना पड़ा। 19वीं सदी तक कविता की भाषा ब्रजभाषा और गद्य की भाषा खड़ी बोली रही। 20वीं सदी के आते–आते खड़ी बोली गद्य–पद्य दोनों की साहित्यिक भाषा बन गयी। इस युग में खड़ी बोली को प्रतिष्ठित करने में विभिन्न धार्मिक,

सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों ने बड़ी सहायता की। फलस्वरूप खड़ी बोली साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा बन गयी।

खड़ी बोली गद्य के आरंभिक रचनाकारों में फोर्ट विलियम कॉलेज के बाहर के दो रचनाकारों–

1. सदासुखलाल 'नियाज' (सुख सागर) और 2. इंषा अल्ला खाँ (रानी केतकी की कहानी)– तथा फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता के दो भाषा मुंषियों – लल्लू लाल जी (प्रेम सागर) तथा सदल मिश्र (नासिकेतोपाख्यान)– के नाम उल्लेखनीय हैं। भारतेन्दु पूर्व युग में मुख्य संघर्ष हिन्दी की स्वीकृति और प्रतिष्ठा को लेकर था। इस युग के दो प्रसिद्ध लेखकों– राजा षिव प्रसाद 'सितारेहिन्द' और राजा लक्ष्मण सिंह– ने हिन्दी के स्वरूप निर्धारण के प्रष्न पर दो सीमांतों का अनुगमन किया। राजा षिव प्रसाद ने हिन्दी का गँवारूपन दूर कर उसे उर्दू–ए मुअल्ला बना दिया तो राजा लक्ष्मण सिंह ने विषुद्ध संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का समर्थन किया।

भारतेन्द युग में भारतेन्दु हरिष्चंद्र के भगीरथ प्रयास के कारण 1873 ई0 में 'हिन्दी नये चाल में ढ़ली'। भारतेन्दु के समय में ही हिन्दी के गद्य का सूत्रपात हुआ। भारतेन्दु हिन्दी गद्य के जनक माने जाते हैं। उन्होंने बड़े पैमाने पर हिन्दी लेखकों की जमात तैयार की, जिसे 'भारतेन्दु मंडल' के नाम से जाना जाता है, उनके द्वारा हिन्दी गद्य की विविध विधाओं में रचना कर हिन्दी का सर्वांगीण विकास किया। किन्तु पद्य के रूप में ब्रजभाषा का प्रष्न बना हुआ रहा, जिसे बाद चलकर द्विवेदी युग में अंत किया गया।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1903 में 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिन्दी में व्याकरणिक अनुषासन को स्थापित किया। उन्होंने हिन्दी का परिष्कार कर उसे आजादी की लड़ाई की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने हेतु पृष्ठभूमि तैयार कर दिया। इसी पृष्ठभूमि पर पद्य में मैथिली षरण गुप्त और गद्य में प्रेमचंद आदि ने हिन्दी के योद्धा के रूप में न केवल कार्य किया बल्कि हिन्दी को आजादी का एक अस्त्र बनाया। इसी प्रक्रिया में छायावाद के चार विराट स्तम्भों जयषंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा ने हिन्दी को विषिष्ट आसन प्रदान किया। प्रेमचंद की अध्यक्षता में 1936 के प्रगतिषील लेखक संघ का अपना योगदान रहा है। महात्मा गांधी आरंभ से ही हिन्दी के पक्षधर थे। छायावाद के बाद प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और अज्ञेय की आधुनिकता बोध ने हिन्दी का न केवल काया कल्प किया बल्कि हिन्दी को उसका वास्तविक अस्तित्व और अपनेपन की पहचान के भाव बोध से जोड़ दिया। हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में भी आचार्य रामचंद्र षुक्ल, हजारी प्र0 द्विवेदी, ष्याम सुंदर दास, नंद दुलारे बाजपेयी, डॉ. रामविलास षर्मा, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. मैनेजर पाण्डेय आदि ने हिन्दी आलोचना को षिखर पर पहुंचाया।

इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि मध्यकालीन हिन्दी अपने संघषषील प्रक्रिया में आज भी गतिषील है और विष्व की प्रमुख भाषाओं से होड़ लेने के लिए सक्षम है।

दिनांक : 26/03/2020 – डॉ0 महेष प्रसाद सिन्हा

डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर